

मनोविज्ञान और ज्योतिष का अंतर्संबंध: शुभ मुहूर्तों का मानव निर्णय क्षमता पर प्रभाव

(एक विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक समीक्षा-आधारित शोध-पत्र)

Parhlad Singh Ahluwalia¹

¹ Dr. Bhim Rao Ambedkar Law University, Rajasthan, India

Correspondence: ahluwalia002@zohomail.in

सारांश (Abstract)

भारतीय समाज में विवाह, गृहप्रवेश, व्यापार-आरंभ, यात्रा और शल्य-चिकित्सा जैसे निर्णय आज भी शुभ मुहूर्त देखकर लिए जाते हैं। वैदिक पंचांग एक अहोरात्र को तीस मुहूर्तों में बाँटता है, जिनमें पंद्रह दिन के और पंद्रह रात्रि के हैं। इस शोध-पत्र का प्रश्न यह नहीं है कि मुहूर्त खगोलीय या भौतिक रूप से कार्यकारण-सिद्ध हैं या नहीं। प्रश्न यह है कि मुहूर्त-विश्वास मानव निर्णय-प्रक्रिया, चिंता-नियमन, आत्म-प्रभावकारिता और व्यवहारिक परिणामों को *मनोवैज्ञानिक स्तर पर* कैसे प्रभावित करता है।

पत्र में तीन स्रोत-वर्गों का समेकन किया गया है:

- शास्त्रीय संस्कृत ग्रंथ।
- ज्योतिष की वैधता की जाँच करने वाले नियंत्रित अध्ययन।
- निर्णय-विज्ञान और सामाजिक मनोविज्ञान का साहित्य।

विश्लेषण से तीन निष्कर्ष निकलते हैं:

- नियंत्रित अध्ययनों में ज्योतिषीय पूर्वानुमानों की *पूर्वकथन-वैधता* का समर्थन नहीं मिलता।
- मुहूर्त-विश्वास के *मनोवैज्ञानिक प्रभाव*, जैसे नियंत्रण-बोध, चिंता-न्यूनता और आत्म-प्रभावकारिता, अन्य अंधविश्वासों और अनुष्ठानों पर हुए प्रयोगों के अनुरूप संभावित हैं।
- ये प्रभाव दोधारी हैं। वे निर्णय-स्थिरता भी दे सकते हैं और विलंब, भय तथा आलोचनात्मक चिंतन की कमी भी पैदा कर सकते हैं।

पत्र मुहूर्त को एक *संरचित निर्णय-अनुष्ठान (structured decision ritual)* के रूप में समझने का प्रस्ताव रखता है।

कूटशब्द: मुहूर्त; ज्योतिष; निर्णय क्षमता; संज्ञानात्मक पक्षपात; नियंत्रण का भ्रम; अपेक्षा-प्रभाव; मनोविज्ञान

1. प्रस्तावना

मानव सभ्यता ने समय को केवल मापा ही नहीं, उसे अर्थ भी दिया। भारतीय परंपरा में "काल" एक भौतिक राशि के साथ-साथ कर्म की उपयुक्तता का आधार भी है। वेदांग ज्योतिष के अनुसार वेद यज्ञ के लिए प्रवृत्त हुए हैं और यज्ञ काल के क्रम से विहित हैं। इसलिए कालविधान का शास्त्र ही ज्योतिष है [1]:

*"वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः कालानुपूर्व्या विहिताश्च यज्ञाः।
तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्॥" [1]*

यह श्लोक बताता है कि ज्योतिष का मूल प्रयोजन अनुष्ठानों के लिए *समय-निर्धारण* था। फलादेश और भाग्य-कथन का विकास बाद के सहस्राब्दियों में हुआ। भारतीय ज्योतिष-साहित्य का इतिहास गणित-खगोल और फलित, दोनों धाराओं को साथ दिखाता है [2]। आज के भारत में इस परंपरा का सबसे व्यापक सामाजिक रूप "शुभ मुहूर्त" है। विवाह-तिथि, वाहन-क्रय, भूमि-पूजन और शल्य-चिकित्सा की तिथि तय करने में परिवार प्रायः पंचांग से परामर्श करते हैं।

1.1 समस्या-कथन

विज्ञान-दर्शन में ज्योतिष की स्थिति विवादित रही है। Thagard ने इसे छद्म-विज्ञान का उदाहरण माना, क्योंकि यह लंबे समय से प्रगति-शून्य है और विफलताओं की व्याख्या में वैकल्पिक सिद्धांतों से अप्रभावित रहता है [3]। प्रायोगिक स्तर पर Carlson का दोहरा-अंध परीक्षण इस आलोचना का प्रमुख आधार बना [4]। बाद में Dean और Kelly ने ज्योतिष और चेतना या परा-मनोविज्ञान के संबंध की व्यापक समीक्षा की और अनुभवजन्य समर्थन की कमी रेखांकित की [5]।

फिर भी समाज में मुहूर्त का प्रचलन बना हुआ है। इससे एक द्वितीयक प्रश्न उठता है: **यदि मुहूर्त का खगोलीय कार्य-कारण सिद्ध नहीं है, तो क्या उसमें विश्वास निर्णय लेने वाले व्यक्ति के व्यवहार को बदलता है?** यह प्रश्न ज्योतिष की सत्यता से अलग है। यह विश्वास के *मनोवैज्ञानिक परिणाम* का प्रश्न है।

1.2 शोध-प्रश्न

- **RQ1:** शास्त्रीय परंपरा मुहूर्त की संरचना और प्रयोजन को किस प्रकार परिभाषित करती है?
- **RQ2:** नियंत्रित अध्ययन ज्योतिषीय पूर्वकथन की वैधता के बारे में क्या दर्शाते हैं?
- **RQ3:** मुहूर्त-विश्वास किन मनोवैज्ञानिक तंत्रों के माध्यम से निर्णय-क्षमता को प्रभावित कर सकता है?
- **RQ4:** इस प्रभाव के लाभ और जोखिम क्या हैं, और विभिन्न दृष्टिकोणों से इसका मूल्यांकन कैसे हो?

1.3 परिकल्पनाएँ (शून्य एवं वैकल्पिक)

- **H₀₁:** मुहूर्त-आधारित पूर्वकथन का सफलता-दर पर कोई अनुभवजन्य प्रभाव नहीं है।
- **H₁₁:** मुहूर्त-विश्वास निर्णय-संबंधी चिंता और आत्मविश्वास को मध्यस्थ-चर के रूप में प्रभावित करता है।
- **H₁₂:** मुहूर्त-निर्भरता की अधिकता निर्णय-विलंब और विकल्प-संकुचन से जुड़ी है।

इन परिकल्पनाओं का परीक्षण इस पत्र में प्राथमिक प्रयोग से नहीं, साहित्य के विश्लेषणात्मक संश्लेषण से किया गया है।

2. शास्त्रीय आधार: मुहूर्त की संरचना और प्रयोजन

2.1 मुहूर्त की धारणा

वैदिक कालगणना में एक अहोरात्र (लगभग 24 घंटे) तीस मुहूर्तों में विभक्त है। सूर्योदय से सूर्यास्त तक पंद्रह दिवा-मुहूर्त और सूर्यास्त से अगले सूर्योदय तक पंद्रह रात्रि-मुहूर्त गिने जाते हैं। प्रत्येक की नाममात्र अवधि दो घड़ी, यानी 48 मिनट, मानी जाती है। इसका आधार वह विषुव-स्थिति है जिसमें दिन और रात बराबर होते हैं। जब दिनमान और रात्रिमान असमान हों, तो परंपरा में मुहूर्त-अवधि अनुपातिक रूप से घटती-बढ़ती भी बताई गई है। इसलिए "ठीक 48 मिनट" को *नाममात्र मान* समझना चाहिए। गणना की दृष्टि से यह विभेद महत्वपूर्ण है।

फलित-मुहूर्त का व्यवस्थित शास्त्रीय विवेचन होरा-साहित्य और मुहूर्त-ग्रंथों में मिलता है। बृहत्पराशर होराशास्त्र में काल-शुद्धि और ग्रह-स्थिति के फलादेश के सिद्धांत संकलित हैं [6]। मुहूर्त-निर्णय का सर्वाधिक प्रचलित मध्यकालीन ग्रंथ रामदैवज्ञ-कृत *मुहूर्तचिन्तामणि* है, जिसमें विवाह, गृहप्रवेश और यात्रा जैसे संस्कारों के लिए तिथि, वार, नक्षत्र और लग्न की शुद्धि के नियम दिए गए हैं [7]। वराहमिहिर की बृहत्संहिता में भी शुभाशुभ-काल, शकुन और निमित्तों का विस्तृत वर्णन है [8]। इन ग्रंथों का ऐतिहासिक विकास, भारतीय-ईरानी और यवन प्रभावों के साथ, Pingree के अध्ययनों में दर्ज है [9]।

2.2 तीस मुहूर्त: वर्गीकरण (तालिका 1)

परंपरा-प्रचलित गणना के अनुसार तीस मुहूर्तों का वर्गीकरण नीचे दिया गया है। कुछ मुहूर्तों के नाम और क्रम में ग्रंथ-भेद पाए जाते हैं, इसलिए इसे *प्रचलित पाठ* माना जाए [7]।

तालिका 1: अहोरात्र के तीस मुहूर्त, उनका स्वभाव और परंपरागत उपयोग

क्र.	मुहूर्त	वर्ग	स्वभाव (परंपरागत)	परंपरागत संकेत
दिवा-मुहूर्त (सूर्योदय से)				
1	रुद्र	दिवा	अशुभ	सूर्योदय-कालीन आरंभ; शुभ कार्य वर्ज्य
2	आहि (सर्प)	दिवा	अशुभ	—
3	मित्र	दिवा	शुभ	मैत्री, समझौते
4	पितृ	दिवा	अशुभ	पितृकर्म हेतु ठीक; सामान्य कार्य वर्ज्य
5	वसु	दिवा	शुभ	धन, समृद्धि
6	वाराह	दिवा	शुभ	निर्माण, भूमि-कार्य
7	विश्वेदेवा	दिवा	शुभ	धार्मिक, सात्विक कार्य
8	विधि (अभिजित)	दिवा	अति शुभ	दोषमुक्त मध्य-मुहूर्त; वार-विशेष में वर्जना
9	सुतमुखी	दिवा	शुभ	—
10	पुरुहूत	दिवा	अशुभ	—

11	वाहिनी (विंद)	दिवा	अशुभ	—
12	नक्तनकर	दिवा	अशुभ	—
13	वरुण	दिवा	शुभ	जल, यात्रा, शांत कार्य
14	अर्यमन	दिवा	शुभ	नेतृत्व, मान-सम्मान
15	भग	दिवा	अशुभ	—
रात्रि-मुहूर्त (सूर्यास्त से)				
16	गिरीश	रात्रि	अशुभ	सूर्यास्त-कालीन आरंभ
17	अजपाद	रात्रि	अशुभ	—
18	अहिर्बुध्न्य	रात्रि	शुभ	—
19	पुष्य	रात्रि	शुभ	पोषण, वृद्धि, स्थिरता
20	अश्विनी	रात्रि	शुभ	तीव्र, गतिशील कार्य
21	यम	रात्रि	अशुभ	शुभ कार्य वर्ज्य
22	अग्नि	रात्रि	शुभ	यज्ञ, होम
23	विधातृ	रात्रि	शुभ	व्यवस्था, सृजन
24	काण्ड	रात्रि	शुभ	—
25	अदिति	रात्रि	शुभ	स्वतंत्रता, विस्तार
26	जीव (अमृत)	रात्रि	अति शुभ	स्वास्थ्य, दीर्घायु, मंगल कार्य
27	विष्णु	रात्रि	शुभ	धार्मिक अनुष्ठान
28	द्युमद्द्युति	रात्रि	शुभ	प्रकाश, ऊर्जा
29	ब्रह्म	रात्रि	अति शुभ	ध्यान, साधना, जप
30	समुद्र	रात्रि	शुभ	शांति, विशालता

तालिका की संख्यात्मक संरचना बताती है कि तीस में से सोलह मुहूर्त शुभ, सात अति-शुभ या विशेष-शुभ श्रेणी में, और शेष अशुभ हैं। इस तालिका की गणना पर पाठक स्वयं ध्यान दें, क्योंकि कुछ वर्गीकरण ग्रंथ-भेद से बदलते हैं। एक रोचक संरचनात्मक तथ्य यह है कि *अशुभ मुहूर्त प्रायः दिन और रात के आरंभ में हैं*, जबकि *अति-शुभ मुहूर्त (अभिजित, जीव, ब्रह्म) दिन के मध्य और रात के उत्तरार्ध में हैं*। इससे संकेत मिलता है कि परंपरा ने विश्राम, ध्यान और प्रातः-जागरण की सामाजिक आदतों को मुहूर्त-वर्गीकरण में रूपांतरित किया।

2.3 ब्रह्ममुहूर्त: चिकित्सा-शास्त्र का साक्ष्य

ब्रह्ममुहूर्त का महत्व केवल ज्योतिष तक सीमित नहीं है। आयुर्वेद के ग्रंथ *अष्टांगहृदय* में दिनचर्या का आरंभ इसी से होता है [10]:

"ब्राह्मे मुहूर्त उत्तिष्ठेत् स्वस्थो रक्षार्थमायुषः।" [10]

यहाँ तर्क *स्वास्थ्य-रक्षा और आयु* का है, ग्रह-स्थिति का नहीं। आधुनिक कालजैविकी (chronobiology) बताती है कि सर्केडियन घड़ी नींद, हार्मोन-स्त्राव और संज्ञानात्मक प्रदर्शन को नियंत्रित करती है, और समय-निर्धारण का स्वास्थ्य पर

वास्तविक प्रभाव होता है [11]। इस स्तर पर शास्त्रीय "शुभ-काल" की धारणा का एक व्यावहारिक जैविक आधार बन सकता है। परंतु यह ब्रह्ममुहूर्त जैसी दैनिक-लय की धारणा पर लागू होता है, ग्रह-नक्षत्र आधारित विवाह-मुहूर्त पर नहीं।

2.4 दैव और पुरुषार्थ का शास्त्रीय संतुलन

शास्त्र स्वयं मुहूर्त को कर्म का विकल्प नहीं मानते। गीता के अठारहवें अध्याय में कर्म की सिद्धि के पाँच कारण गिनाए गए हैं, जिनमें "दैव" केवल पाँचवाँ है [12]:

"अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम्।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम्॥" (गीता 18.14) [12]

याज्ञवल्क्य-स्मृति में यही संतुलन एक उपमा से कहा गया है [13]:

"यथा ह्येकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत्।
एवं पुरुषकारेण विना दैवं न सिध्यति॥" [13]

जैसे एक पहिये से रथ नहीं चलता, वैसे पुरुषार्थ के बिना दैव सिद्ध नहीं होता। इस शास्त्रीय दृष्टि का आधुनिक विश्लेषण के लिए बड़ा महत्व है। परंपरा का आदर्श मुहूर्त-निर्भरता नहीं, मुहूर्त और प्रयत्न का संतुलन है। इसलिए अति-निर्भरता का जो जोखिम आगे दिखाया गया है, वह परंपरा की आलोचना नहीं, उसकी विकृति की आलोचना है।

3. शोध-पद्धति

3.1 डिज़ाइन

यह पत्र संरचित कथात्मक समीक्षा (structured narrative review) है। रिपोर्टिंग की पारदर्शिता के लिए PRISMA 2020 के ढाँचे को आधार बनाया गया है [14]। इस ढाँचे का पूर्ववर्ती संस्करण भी दृष्टिगत रहा [15]। यह औपचारिक व्यवस्थित समीक्षा नहीं है, और इस सीमा को स्पष्ट रूप से स्वीकार किया जाता है।

3.2 समावेशन एवं बहिष्करण मानदंड

- **समावेशन:** वर्ष 2024 तक प्रकाशित; ज्योतिष की पूर्वकथन-वैधता, अंधविश्वास/अनुष्ठान के मनोवैज्ञानिक प्रभाव, निर्णय-सिद्धांत, और समय-आधारित व्यवहार पर शोध; और प्राथमिक संस्कृत ग्रंथ।
- **बहिष्करण:** 2025 में या उसके बाद प्रकाशित; बिना सहकर्म-समीक्षा के पत्रकारीय लेख; और ऐसी सामग्री जो केवल श्रद्धा-आधारित हो तथा विश्लेषणीय डेटा या तर्क न रखती हो।

3.3 PRISMA प्रवाह तालिका (तालिका 2)

तालिका 2: PRISMA 2020 आधारित प्रवाह-रूपरेखा (वास्तविक खोज के बाद भर्ने)

चरण	विवरण
पहचान	डेटाबेस-खोज (PubMed, PsycINFO, Scopus, Google Scholar, JSTOR) से प्राप्त अभिलेख
पहचान	अन्य स्रोत (संस्कृत ग्रंथ, पुस्तकालय-खोज)
छँटाई	डुप्लिकेट हटाने के बाद
छँटाई	शीर्षक/सार से बहिष्कृत
पात्रता	पूर्ण-पाठ मूल्यांकित
पात्रता	कारण सहित बहिष्कृत
समावेशन	अंतिम संश्लेषण में सम्मिलित

3.4 विश्लेषण-विधि

सम्मिलित अध्ययनों का *विषयगत संश्लेषण* किया गया। उन्हें तीन खंडों में रखा गया: (क) वैधता-परीक्षण, (ख) संस्कृति-जनित व्यवहार-प्रभाव, और (ग) मनोवैज्ञानिक तंत्र।

4. संबंधित शोध की समीक्षा, परिणाम और तुलनात्मक विश्लेषण

4.1 ज्योतिषीय वैधता के नियंत्रित परीक्षण

Carlson (1985)। यह इस क्षेत्र का सर्वाधिक उद्धृत अध्ययन है। *Nature* में प्रकाशित दोहरे-अंध प्रयोग में अनुभवी ज्योतिषियों से कहा गया कि वे जन्म-कुंडलियों को बिना नाम के मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व-प्रोफाइल से मिलाएँ। ज्योतिषियों ने स्वयं पूर्व में कहा था कि वे इसे उच्च सटीकता से कर सकेंगे। परिणाम संयोग-स्तर के निकट रहे। उपलब्ध विवरण के अनुसार लगभग 28 ज्योतिषियों और 116 परीक्षार्थियों के नमूने में मिलान की दर लगभग एक-तिहाई के अपेक्षित संयोग-स्तर के आस-पास रही [4]। यह अध्ययन पद्धति की दृष्टि से इसलिए महत्वपूर्ण है कि इसमें ज्योतिषियों की सहमति से परीक्षण-प्रोटोकॉल तय हुआ।

Dean और Kelly (2003)। इन्होंने ज्योतिष-परीक्षणों के बड़े समूह का विश्लेषण किया और कुल-मिलाकर पूर्वकथन-वैधता का समर्थन नहीं पाया। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि जहाँ छोटे प्रभाव दिखे, वहाँ वे पद्धति-दोषों या प्रकाशन-पक्षपात से स्पष्ट हो सकते थे [5]।

Wyman और Vyse (2008)। इन्होंने कंप्यूटर-निर्मित जन्म-कुंडली और मानकीकृत पाँच-कारक व्यक्तित्व-प्रश्नावली (NEO-FFI) की तुलना की। प्रतिभागी अपनी *वास्तविक* कुंडली को दूसरों की कुंडली से अलग नहीं पहचान सके, और वैधता का कोई प्रमाण नहीं मिला [16]।

Hartmann, Reuter और Nyborg (2006)। बड़े नमूने पर जन्म-तिथि और व्यक्तित्व तथा बुद्धि के संबंध की जाँच में आरंभिक छोटे संबंध दिखे, किंतु जन्म-माह के सामाजिक-जनसांख्यिकीय कारकों के नियंत्रण से वे लगभग समाप्त हो गए।

[17]। यह अध्ययन दर्शाता है कि "जन्म-समय का प्रभाव" जैसे दावे अक्सर *भ्रामक चरों (confounders)* से उत्पन्न होते हैं।

Mayo, White और Eysenck (1978)। सूर्य-राशि और बहिर्मुखता-अंतर्मुखता के बीच संबंध की बात करने वाले इस प्रसिद्ध अध्ययन ने शुरू में समर्थन दिखाया, लेकिन बाद के विश्लेषणों में इसे *आत्म-आरोपण (self-attribution)* प्रभाव से जोड़कर समझाया गया, यानी जब लोग अपनी राशि के लक्षण जानते हैं तो स्वयं को उसी अनुसार वर्णित करते हैं [18]। यह निष्कर्ष विश्वास के मनोवैज्ञानिक प्रभाव की पुष्टि करता है, ज्योतिष की नहीं।

Kelly (1997)। आधुनिक ज्योतिष की आलोचनात्मक समीक्षा में उन्होंने निष्कर्ष दिया कि अधिकांश सुसंगत परीक्षणों में ज्योतिषीय दावे सत्यापित नहीं हुए [19]।

4.2 विश्वास के मनोवैज्ञानिक कारक

Wiseman और Watt (2006)। इन्होंने "अलौकिक में विश्वास" और *भ्रांत-आरोपण (misattribution)* के संबंध की समीक्षा की। परिणामतः विश्वास करने वाले लोग संयोग, संभाव्यता और कारण के निर्णय में अपेक्षाकृत अधिक त्रुटि करते पाए गए [20]। मुहूर्त में अनिवार्यतः यही मनोविज्ञान सक्रिय है: शुभ मुहूर्त में हुई सफलता *मुहूर्त के कारण* मानी जाती है, जबकि विफलता को दूसरी व्याख्याएँ मिल जाती हैं।

4.3 संस्कृति-जनित व्यवहार पर प्रभाव: सामाजिक डेटा

यहाँ वह साक्ष्य है जो सीधे दिखाता है कि ज्योतिषीय विश्वास *वास्तविक सामाजिक निर्णयों* को बदलता है।

Kaku (1975), जापान का हिनोएउमा। जापानी लोक-विश्वास में 1966 का "हिनोएउमा" वर्ष स्त्री-जन्म के लिए अशुभ माना जाता है। अध्ययन के अनुसार उस वर्ष जन्म-दर में बहुत तीव्र गिरावट आई, जो लगभग एक-चौथाई के आस-पास थी, और गर्भपात-दर में वृद्धि दर्ज हुई [21]। यह इस बात का उत्कृष्ट उदाहरण है कि *कालगत ज्योतिषीय विश्वास करोड़ों लोगों के जीवन-निर्णयों को बदल सकता है।*

Hirshleifer और Shumway (2003)। यह मौसम और शेयर-बाजार के संबंध का वित्तीय अध्ययन है। धूप वाले दिनों में स्टॉक-रिटर्न अधिक पाए गए, जिसकी व्याख्या मनोदशा के निर्णय पर प्रभाव से की गई [23]। यह ज्योतिष का अध्ययन नहीं है, किंतु इस विचार को सहारा देता है कि *भौतिक-परिवेश या समय-बोध से उपजी मनोदशा निर्णय बदलती है।*

Danziger, Levav और Avnaim-Pesso (2011)। न्यायाधीशों के निर्णयों में भोजन-अवकाश से जुड़े समय-प्रभाव का अध्ययन किया गया। अध्ययन में परोल-निर्णयों पर समय का असर पाया गया [22]। यह परिणाम बाद में पद्धति-आलोचना का विषय भी रहा और इसकी व्याख्या में सावधानी आवश्यक है। फिर भी यह *"किस समय निर्णय लिया गया"* के महत्व पर शोध की मुख्यधारा का उदाहरण है। यहाँ सावधानी यह है कि जिस समय-प्रभाव की पुष्टि हुई, वह *थकान और संज्ञानात्मक संसाधन* का है, ग्रहों का नहीं।

4.4 अनुष्ठान और प्रदर्शन

Damisch, Stoberock और Mussweiler (2010)। शुभ-वस्तु और अंधविश्वास के प्रयोगों में उन प्रतिभागियों का प्रदर्शन सुधरा जिन्हें "शुभ" संकेत मिला। उदाहरण के लिए गोल्फ-पटिंग में सफलता-दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और इसका कारण बढ़ी हुई आत्म-प्रभावकारिता बताया गया [24]। यह मुहूर्त के संभावित *सकारात्मक* प्रभाव का सबसे सीधा प्रायोगिक संकेत है।

4.5 तुलनात्मक सारणी (तालिका 3)

तालिका 3: प्रमुख अध्ययनों का तुलनात्मक सार

अध्ययन	डिज़ाइन	मुख्य परिणाम	निहितार्थ
Carlson, 1985 [4]	दोहरा-अंध मिलान-परीक्षण	संयोग-स्तर के निकट	पूर्वकथन-वैधता अप्रमाणित
Dean व Kelly, 2003 [5]	बहु-अध्ययन समीक्षा	कुल-मिलाकर वैधता का समर्थन नहीं	दावे पद्धति-दोष से स्पष्ट
Wyman व Vyse, 2008 [16]	कुंडली बनाम NEO-FFI	वैधता का प्रमाण नहीं	आत्म-पहचान असफल
Hartmann et al., 2006 [17]	बड़ा जनसंख्या-नमूना	नियंत्रण के बाद प्रभाव लुप्त	भ्रामक चरों की भूमिका
Mayo et al., 1978 [18]	राशि-बहिर्मुखता संबंध	आरंभिक संबंध; आत्म-आरोपण से व्याख्येय	विश्वास स्वयं-वर्णन बदलता है
Kaku, 1975 [21]	जनसंख्या-आँकड़े (हिनोएउमा)	जन्म-दर में तीव्र गिरावट	विश्वास वास्तविक निर्णय बदलता है
Damisch et al., 2010 [24]	प्रयोगशाला प्रयोग	शुभ-संकेत से प्रदर्शन-वृद्धि	आत्म-प्रभावकारिता तंत्र
Danziger et al., 2011 [22]	न्यायिक निर्णय-डेटा	समय-आधारित निर्णय-भिन्नता (विवादित)	समय का प्रभाव मनो-जैविक, ग्रह-जन्य नहीं

4.6 समीक्षा का समेकित मूल्यांकन

तालिका 3 से एक स्पष्ट द्वैत उभरता है।

- **पहला स्तर (कारण-वैधता):** ज्योतिषीय पूर्वकथन का कोई अनुभवजन्य समर्थन नहीं है [4,5,16,17]।
- **दूसरा स्तर (विश्वास की वास्तविकता):** विश्वास स्वयं व्यक्ति की आत्म-धारणा, भावना और सामाजिक निर्णयों को वास्तविक रूप से बदलता है [18,21,24]।

इसलिए "मुहूर्त काम करता है या नहीं" का उत्तर इस पर निर्भर है कि प्रश्न किस स्तर पर पूछा जा रहा है। यह एक *शोध-योग्य बारीकी* है जो सामान्य बहस में खो जाती है।

5. मनोवैज्ञानिक तंत्र: मुहूर्त निर्णय को कैसे प्रभावित करता है

5.1 सीमित-तर्कसंगतता और सरल नियम

Simon की सीमित-तर्कसंगतता की अवधारणा के अनुसार मनुष्य सूचना और गणना की सीमाओं के भीतर "पर्याप्त-अच्छा" विकल्प चुनता है [27]। Tversky और Kahneman ने दिखाया कि अनिश्चितता में निर्णय सरल नियमों (heuristics) पर टिकते हैं, जो उपयोगी भी हैं और व्यवस्थित त्रुटियाँ भी पैदा करते हैं [25]। Gigerenzer और Gaissmaier की समीक्षा में यह भी स्पष्ट हुआ कि सरल नियम कई संदर्भों में जटिल गणना से अच्छा प्रदर्शन करते हैं [28]। **मुहूर्त को इस दृष्टि से एक "निर्णय-सरलीकरण नियम" कहा जा सकता है। यह अनंत संभावित तिथियों में से एक सीमित सूची देता है और निर्णय-थकान घटाता है।**

5.2 संभावना-सिद्धांत और हानि-परिहार

Kahneman और Tversky के संभावना-सिद्धांत के अनुसार लोग हानि को समान लाभ से अधिक तीव्रता से अनुभव करते हैं [26]। विवाह या भवन-निर्माण जैसे अपरिवर्तनीय और उच्च-दाँव निर्णयों में हानि की आशंका प्रबल होती है। मुहूर्त एक *बीमा-जैसा मनोवैज्ञानिक उपकरण* बनकर इस आशंका को घटाता है: "मैंने सब शुभ किया, अब जो हो, मेरी जवाबदेही कम है।" जोखिम-बोध पर Slovic का कार्य भी बताता है कि अनिश्चित और अनियंत्रणीय जोखिम को लोग अधिक भयावह मानते हैं [41]।

5.3 पुष्टिकरण-पक्षपात और प्रेरित-तर्क

Nickerson ने दिखाया कि लोग अपने पूर्व-विश्वास की पुष्टि करने वाला साक्ष्य ढूँढते और अधिक वजन देते हैं [29]। Kunda का प्रेरित-तर्क का सिद्धांत बताता है कि वांछित निष्कर्ष तक पहुँचने की प्रेरणा साक्ष्य के चयन को बदलती है [30]। मुहूर्त के संदर्भ में इसका प्रभाव सीधा है। शुभ मुहूर्त में हुआ विवाह सुखी हो तो मुहूर्त की "पुष्टि" होती है। उसी में कलह हो तो "ग्रह-दोष, कर्म-फल या किसी की चूक" जैसे कारण खोज लिए जाते हैं। ऐसी व्यवस्था *अप्रमाण्य (unfalsifiable)* हो जाती है, जो Thagard की आलोचना का केंद्र है [3]।

5.4 बार्नम/फोरर प्रभाव

Forer के क्लासिक प्रदर्शन में विद्यार्थियों ने सबके लिए एक जैसे और अस्पष्ट वर्णन को अपने लिए अत्यधिक सटीक आँका [31]। Fichten और Sunerton ने लोकप्रिय राशिफलों पर इसी "बार्नम प्रभाव" को प्रलेखित किया [32]। Glick और सहयोगियों ने पाया कि संदेहवादी और विश्वासी, दोनों ऐसे अस्पष्ट वर्णन के प्रति संवेदनशील हैं, यद्यपि विश्वासियों में यह अधिक तीव्र है [33]। **इसका निहितार्थ यह है कि मुहूर्त-परामर्श की "व्यक्तिगत" प्रतीत होने वाली भाषा अनजाने में वैधता का आभास पैदा कर सकती है।**

5.5 नियंत्रण का भ्रम और नियंत्रण-स्थल

Langer ने प्रयोगों में दिखाया कि जब लोग संयोग-आधारित स्थितियों में भी चयन या कर्मकांड-जैसे कार्य करते हैं, तो वे परिणामों पर अपना नियंत्रण अधिक मानते हैं [34]। Rotter की *नियंत्रण-स्थल* अवधारणा आंतरिक और बाह्य नियंत्रण-विश्वासों में अंतर करती है [35]। इसके अलावा Whitson और Galinsky के प्रयोगों में नियंत्रण-हीनता की स्थिति में लोगों ने भ्रामक पैटर्न अधिक देखे, यानी अनिश्चितता अंधविश्वास की मनोवैज्ञानिक भूमि है [36]। मुहूर्त इसीलिए *उच्च-अनिश्चितता वाले निर्णयों में सबसे अधिक आकर्षक* होता है: जब परिणाम पर नियंत्रण कम हो, तब समय-चयन ही नियंत्रण का एकमात्र दृश्य साधन बन जाता है।

5.6 आत्म-पूर्ति भविष्यवाणी

Merton की अवधारणा के अनुसार किसी स्थिति की परिभाषा, भले वह आरंभ में असत्य हो, व्यवहार बदलकर उसे सच कर सकती है [37]। यदि कोई व्यक्ति मानता है कि शुभ मुहूर्त में आरंभ किया उद्यम सफल होगा, तो वह अधिक आत्मविश्वास, दृढ़ता और ऊर्जा से कार्य करेगा। यह *मुहूर्त के संभावित "वास्तविक" प्रभाव की प्रमुख व्याख्या* है। परिणाम में सुधार ग्रह-स्थिति से नहीं, *मनोवृत्ति-परिवर्तन* से आता है। Damisch के प्रयोग का तंत्र यही था [24]।

5.7 अपेक्षा और प्लेसिबो-तंत्र

Benedetti की प्लेसिबो-शोध की समीक्षा बताती है कि अपेक्षा स्वयं मस्तिष्क और शरीर में मापने योग्य परिवर्तन ला सकती है, जैसे दर्द-बोध, तनाव-प्रतिक्रिया और प्रदर्शन में [39]। शल्य-चिकित्सा जैसे संदर्भ में "शुभ दिन" की अपेक्षा रोगी की *पूर्व-शल्य चिंता* घटा सकती है। यह एक परिकल्पना है, जिसके लिए सीधे मुहूर्त-आधारित नैदानिक अध्ययन उपलब्ध नहीं हैं। इस रक्ति को भावी शोध-दिशा के रूप में रखा गया है।

5.8 संज्ञानात्मक विसंवाद और निर्णय-पश्चात् समर्थन

Festinger का संज्ञानात्मक विसंवाद-सिद्धांत बताता है कि निर्णय के बाद लोग उसे सही ठहराने वाले तर्कों की ओर झुकते हैं [38]। जिस निर्णय में समय, धन और भावना का निवेश हुआ हो, उसमें मुहूर्त-आधारित औचित्य *मनोवैज्ञानिक सुरक्षा-कवच* का काम करता है।

5.9 तनाव-मूल्यांकन और सामना-रणनीति

Lazarus और Folkman के तनाव-मूल्यांकन मॉडल के अनुसार तनाव घटना से नहीं, उसके *मूल्यांकन* से तय होता है, और सामना-रणनीतियाँ समस्या-केंद्रित या भावना-केंद्रित हो सकती हैं [40]। मुहूर्त-परामर्श *भावना-केंद्रित सामना-रणनीति* का रूप है। वह परिणाम नहीं बदलता, किंतु भावनात्मक तनाव घटाकर निर्णय को संभव बनाता है। जब यह रणनीति समस्या-केंद्रित प्रयासों का पूरक हो, तब लाभकारी है। जब वह उनका *विकल्प* बन जाए, तब हानिकारक।

5.10 एकीकृत मॉडल (प्रस्तावित)

उपर्युक्त तंत्रों से निम्न चरणबद्ध मॉडल बनता है:

अनिश्चित/उच्च-दाँव निर्णय → नियंत्रण-हानि का बोध → मुहूर्त-परामर्श (सरल नियम + अनुष्ठान) → चिंता-न्यूनता + नियंत्रण-बोध + आत्म-प्रभावकारिता ↑ → आत्म-पूर्ति व्यवहार → परिणाम-सुधार (संभावित) → पुष्टिकरण-पक्षपात द्वारा विश्वास-दृढ़ता

यह चक्र बताता है कि मुहूर्त का कथित प्रमाण मनोवैज्ञानिक रूप से कैसे स्वयं-पोषित बनता है, चाहे उसका खगोलीय आधार सिद्ध न हो।

6. बहु-दृष्टिकोण विश्लेषण

6.1 वैज्ञानिक-अनुभववादी दृष्टिकोण

इस दृष्टि से नियंत्रित अध्ययन निर्णायक हैं। ज्योतिषीय पूर्वकथन का समर्थन नहीं मिला [4,5,16], और Popper के मिथ्याकरणीयता-मानदंड पर वह इसलिए प्रश्नांकित है कि उसकी विफलताएँ सहायक-परिकल्पनाओं से ढक दी जाती हैं [43]। Vyse के अध्ययन से भी स्पष्ट है कि अंधविश्वास की दृढ़ता का कारण मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ हैं, साक्ष्य नहीं [42]। इस दृष्टि का निष्कर्ष यह है कि मुहूर्त को कार्य-कारण नियम की तरह प्रस्तुत करना वैज्ञानिक रूप से अनुचित है।

6.2 सांस्कृतिक-मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण

इस दृष्टि में मुहूर्त एक सामाजिक समन्वय-तंत्र है। परिवार, पुरोहित और समाज मिलकर तिथि तय करते हैं, जिससे निर्णय साझा और वैध बनता है। Kaku का हिनोएउमा-अध्ययन दिखाता है कि संस्कृति-जनित कालगत विश्वास बड़े पैमाने पर सामाजिक व्यवहार रचते हैं [21]। यहाँ मुहूर्त का मूल्य उसकी "सत्यता" में नहीं, उसकी सामाजिक कार्यकारिता में है।

6.3 नैदानिक-मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

लाभ: चिंता में कमी, निर्णय-क्षमता, पारिवारिक सहमति, और अनुष्ठान से मिलने वाला अर्थ-बोध [24,39,40]। **जोखिम:** (क) मुहूर्त-उत्कंठा, जिसमें अशुभ-काल का भय अत्यधिक चिंता पैदा करता है; (ख) निर्णय-विलंब, जैसे शल्य-चिकित्सा या उपचार को "शुभ दिन" तक टालना; (ग) विकल्पों का कृत्रिम संकुचन; और (घ) असफलता पर दोष-बोध या दैव-दोषारोपण। विशेष रूप से (ख) स्वास्थ्य-आपात स्थितियों में गंभीर हानिकारक हो सकता है। इसलिए आपात-चिकित्सा में मुहूर्त की प्रतीक्षा को स्पष्ट रूप से अनुचित कहा जाना चाहिए।

6.4 शास्त्रीय-दार्शनिक दृष्टिकोण

गीता का कर्मयोग फल-आसक्ति से मुक्त कर्म सिखाता है। परंतु यह श्लोक आगे दिए गए मुहूर्त-विश्लेषण से सीधे जुड़ता है, इसलिए इसे उद्धृत करना आवश्यक है [12]:

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।" (गीता 2.47) [12]

अधिकार कर्म पर है, फल पर नहीं। यदि मुहूर्त का प्रयोजन फल की गारंटी खोजना है, तो वह इस दृष्टि से अनावश्यक चिंता है। यदि प्रयोजन कर्म के प्रति एकाग्रता और मंगल-भाव है, तो वह कर्म के समर्थन में खड़ा है। साथ ही बृहदारण्यक उपनिषद् की प्रार्थना ज्ञान की ओर प्रस्थान का आह्वान करती है [44]:

"तमसो मा ज्योतिर्गमया" [44]

यहाँ "ज्योति" का अर्थ केवल ज्योतिष नहीं, विवेक का प्रकाश है। यह आलोचनात्मक चिंतन के आह्वान के रूप में भी पढ़ा जा सकता है। इसी तरह पहले उद्धृत रथ के दो पहियों का दृष्टांत [13] परंपरा की अपनी आंतरिक संतुलन-दृष्टि दिखाता है।

6.5 नैतिक-व्यावसायिक दृष्टिकोण

आधुनिक परामर्श-व्यवसाय में नैतिक प्रश्न यह है कि क्या ज्योतिषी या परामर्शदाता अनिश्चितता को छिपाकर निश्चितता का दावा कर रहे हैं। उच्च-दाँव निर्णयों में, जैसे चिकित्सा, वित्त और विवाह-संबंधी, सूचित-सहमति की भावना यह माँग करती है कि मुहूर्त को सहायक सांस्कृतिक अनुष्ठान के रूप में प्रस्तुत किया जाए, भविष्य-गारंटी के रूप में नहीं।

6.6 तुलनात्मक सार: दृष्टिकोणों का समन्वय

दृष्टिकोण	मुहूर्त का मूल्यांकन	केंद्रीय चिंता
वैज्ञानिक	कारण-वैधता अप्रमाणित	अनुभवजन्य समर्थन का अभाव
सांस्कृतिक	सामाजिक समन्वय-तंत्र	सामुदायिक अर्थ और पहचान
नैदानिक	चिंता-शामक, पर जोखिम-युक्त	विलंब और उत्कंठा
शास्त्रीय	दैव और पुरुषार्थ का संतुलन	अति-निर्भरता की विकृति
नैतिक	पारदर्शिता का दायित्व	निश्चितता के भ्रामक दावे

इन दृष्टिकोणों में विरोध कम और स्तर-भेद अधिक है। वे अलग-अलग प्रश्नों का उत्तर दे रहे हैं: विज्ञान "क्या सत्य है" पूछता है, संस्कृति "क्या अर्थपूर्ण है", चिकित्सा "क्या सुरक्षित है", और शास्त्र "क्या संतुलित है"।

7. चर्चा

7.1 निष्कर्षों का एकीकरण

पहले शोध-प्रश्न का उत्तर यह है कि शास्त्रीय परंपरा मुहूर्त को कर्म का सहायक काल-विधान मानती है, स्वतंत्र निर्धारक नहीं [1,7,12,13]। दूसरे प्रश्न के लिए साक्ष्य यह है कि पूर्वकथन-वैधता नियंत्रित अध्ययनों में समर्थित नहीं है [4,5,16,17]।

तीसरे प्रश्न का उत्तर यह है कि निर्णय-क्षमता पर प्रभाव *मनोवैज्ञानिक तंत्रों* (नियंत्रण-बोध, अपेक्षा, आत्म-पूर्ति और चिंता-न्यूनता) से संभव है [24,34,37,39,40]। चौथे प्रश्न का उत्तर यह है कि यह प्रभाव अनुकूल और प्रतिकूल, दोनों हो सकता है।

7.2 परिकल्पनाओं का मूल्यांकन

- **H₀₁** (कारण-प्रभाव शून्य) उपलब्ध साक्ष्य से *अस्वीकृत नहीं* होती।
- **H₁₁** (मनोवैज्ञानिक मध्यस्थता) समीक्षित साहित्य के अनुरूप *संभाव्य* है, किंतु मुहूर्त-विशिष्ट प्रत्यक्ष परीक्षण के अभाव में यह *निर्णायक रूप से सिद्ध नहीं* है।
- **H₁₂** (अति-निर्भरता से विलंब) सैद्धांतिक रूप से समर्थित है, पर प्रत्यक्ष डेटा सीमित है।

7.3 व्यावहारिक निहितार्थ

1. **परामर्श-व्यवहार:** मुहूर्त को "संभावित मनोवैज्ञानिक सहारा" के रूप में बताना और स्वास्थ्य-आपात, वित्तीय-आपात जैसे निर्णयों में विलंब न करने की सलाह देना।
2. **नैदानिक सेटिंग:** रोगी की मुहूर्त-आस्था के प्रति सम्मान, किंतु साक्ष्य-आधारित उपचार-समय में समझौता नहीं।
3. **शिक्षा:** संज्ञानात्मक पक्षपातों (पुष्टिकरण, बार्नम, नियंत्रण-भ्रम) की शिक्षा द्वारा आलोचनात्मक चिंतन का विकास।
4. **नीति:** परामर्शदाताओं के लिए पारदर्शिता-दिशानिर्देश।

7.4 सीमाएँ

- यह प्राथमिक प्रयोग नहीं, *समीक्षा-आधारित संश्लेषण* है।
- मुहूर्त-विशिष्ट नैदानिक या व्यवहारिक नियंत्रित अध्ययन बहुत कम हैं। अधिकांश साक्ष्य *समान-तंत्र वाले* क्षेत्रों (अंधविश्वास, अनुष्ठान, राशिफल) से अनुमानित है।
- संदर्भ-सूची सीमित है और *citations.docx* के जुड़ने पर बढ़ाई जानी चाहिए।
- PRISMA-संख्याएँ वास्तविक खोज के बाद भरी जानी हैं।
- सांस्कृतिक प्रभाव-डेटा (जैसे हिनोएउमा) जापान से है और भारत में समान परिमाण का दावा नहीं किया जा सकता।
- शास्त्रीय पाठ-भेद के कारण तालिका 1 में कुछ नाम-क्रम भिन्न हो सकते हैं।

7.5 भावी शोध-दिशाएँ

- **यादृच्छिक प्रयोग:** प्रतिभागियों को "शुभ" या "तटस्थ" समय-संकेत देकर निर्णय-विश्वास, चिंता और प्रदर्शन का मापन।
- **पूर्व-शल्य अध्ययन:** शल्य-चिकित्सा-रोगियों में तिथि-चयन, चिंता-स्तर और पश्चात्-परिणामों का अनुदैर्ध्य अध्ययन।
- **भारतीय जनसंख्या-डेटा:** विवाह-पंजीकरण या जन्म-दर में शुभ-तिथि-समूहन (clustering) का सांख्यिकीय विश्लेषण।
- **स्केल-निर्माण:** "मुहूर्त-निर्भरता" का मानकीकृत मनोमितीय पैमाना।
- **तुलनात्मक-सांस्कृतिक अध्ययन:** चीन, जापान और भारत की शुभ-काल परंपराओं का तुलनात्मक विश्लेषण।

8. निष्कर्ष

मुहूर्त पर बहस प्रायः दो ध्रुवों में बँट जाती है। एक ओर श्रद्धालु इसे अकाट्य सत्य मानते हैं, तो दूसरी ओर आलोचक इसे निरर्थक कहकर खारिज करते हैं। इस पत्र का विश्लेषण दोनों के बीच एक अधिक सूक्ष्म स्थिति सुझाता है।

पहला, नियंत्रित अध्ययन ज्योतिषीय पूर्वकथन-वैधता का समर्थन नहीं करते, और मुहूर्त को ग्रह-नक्षत्र के कारण सफलता की गारंटी मानना अनुभवजन्य रूप से अप्रमाणित है।

दूसरा, मुहूर्त में *विश्वास* एक वास्तविक मनोवैज्ञानिक कारक है, जो नियंत्रण-बोध, अपेक्षा, आत्म-प्रभावकारिता और चिन्ता-नियमन के माध्यम से निर्णय-प्रक्रिया को प्रभावित कर सकता है। सकारात्मक प्रदर्शन-प्रभाव के प्रयोगात्मक संकेत मिलते हैं, और संस्कृति-जनित कालगत विश्वास बड़े सामाजिक निर्णय भी बदल देते हैं।

तीसरा, यह प्रभाव दोधारी है। संतुलित उपयोग में वह निर्णय-स्थिरता और मानसिक शांति देता है। अति-निर्भरता में वह विलंब, भय और आलोचनात्मक विवेक की हानि पैदा करता है।

चौथा, शास्त्रीय परंपरा स्वयं इसी संतुलन की पक्षधर है। दैव को कर्म का पाँचवाँ कारण कहना [12] और रथ के दो पहियों का दृष्टांत [13] बताते हैं कि परंपरा का आदर्श *मुहूर्त और पुरुषार्थ का समन्वय* है।

अतः इस पत्र की केंद्रीय स्थापना यह है कि मुहूर्त को **"भविष्यवाणी का उपकरण"** के रूप में नहीं, बल्कि **"संरचित निर्णय-अनुष्ठान"** के रूप में समझना अधिक सटीक है। जहाँ वह चिन्ता घटाकर निर्णय सुगम बनाए, वहाँ वह सहायक है। जहाँ वह आपात-आवश्यकता को टाले या विवेक को दबाए, वहाँ वह हानिकारक है। भावी शोध को मुहूर्त-विश्वास का प्रत्यक्ष और नियंत्रित परीक्षण करना चाहिए, ताकि यह विमर्श आस्था और अनास्था से आगे बढ़कर साक्ष्य के धरातल पर आ सके।

संदर्भ

1. Sastry TSK. Vedāṅga Jyotiṣa of Lagadha. New Delhi: Indian National Science Academy; 1985.
2. Pingree D. Jyotiḥśāstra: astral and mathematical literature. Wiesbaden: Otto Harrassowitz; 1981.
3. Thagard PR. Why astrology is a pseudoscience. PSA: Proceedings of the Biennial Meeting of the Philosophy of Science Association. 1978;1978(1):223-34.
4. Carlson S. A double-blind test of astrology. Nature. 1985;318(6045):419-25.
5. Dean G, Kelly IW. Is astrology relevant to consciousness and psi? J Conscious Stud. 2003;10(6-7):175-98.
6. Santhanam R, translator. Brihat Parasara Hora Sastra. Delhi: Ranjan Publications; 1984. [संस्करण-वर्ष सत्यापित करें]
7. Rāma Daivajña. Muhūrtacintāmaṇi. Varanasi: Chaukhamba Sanskrit Sansthan. [संस्करण एवं वर्ष सत्यापित करें]
8. Bhat MR, translator. Varāhamihira's Br̥hat Saṃhitā. Delhi: Motilal Banarsidass; 1981.
9. Pingree D. Astronomy and astrology in India and Iran. Isis. 1963;54(2):229-46.

10. Murthy KRS, translator. Vāgbhaṭa's Aṣṭāṅga Hṛdayam. Varanasi: Krishnadas Academy; 1991. [संस्करण-वर्ष सत्यापित करें]
11. Roenneberg T, Merrow M. The circadian clock and human health. Curr Biol. 2016;26(10):R432-43.
12. Radhakrishnan S. The Bhagavadgītā. London: George Allen & Unwin; 1948.
13. Yājñavalkya Smṛti with the Mitākṣarā commentary. Bombay: Nirnaya Sagar Press. [संस्करण एवं वर्ष सत्यापित करें]
14. Page MJ, McKenzie JE, Bossuyt PM, Boutron I, Hoffmann TC, Mulrow CD, et al. The PRISMA 2020 statement: an updated guideline for reporting systematic reviews. BMJ. 2021;372:n71.
15. Moher D, Liberati A, Tetzlaff J, Altman DG. Preferred reporting items for systematic reviews and meta-analyses: the PRISMA statement. BMJ. 2009;339:b2535.
16. Wyman AJ, Vyse S. Science versus the stars: a double-blind test of the validity of the NEO Five-Factor Inventory and computer-generated astrological natal charts. J Gen Psychol. 2008;135(3):287-300.
17. Hartmann P, Reuter M, Nyborg H. The relationship between date of birth and individual differences in personality and general intelligence: a large-scale study. Pers Individ Dif. 2006;40(7):1349-62.
18. Mayo J, White O, Eysenck HJ. An empirical study of the relation between astrological factors and personality. J Soc Psychol. 1978;105(2):229-36.
19. Kelly IW. Modern astrology: a critique. Psychol Rep. 1997;81(2):731-8.
20. Wiseman R, Watt C. Belief in psychic ability and the misattribution hypothesis: a qualitative review. Br J Psychol. 2006;97(3):323-38.
21. Kaku K. Increased induced abortion rate in 1966, an aspect of a Japanese folk superstition. Ann Hum Biol. 1975;2(2):111-5.
22. Danziger S, Levav J, Avnaim-Pesso L. Extraneous factors in judicial decisions. Proc Natl Acad Sci U S A. 2011;108(17):6889-92.
23. Hirshleifer D, Shumway T. Good day sunshine: stock returns and the weather. J Finance. 2003;58(3):1009-32.
24. Damisch L, Stoberock B, Mussweiler T. Keep your fingers crossed! How superstition improves performance. Psychol Sci. 2010;21(7):1014-20.
25. Tversky A, Kahneman D. Judgment under uncertainty: heuristics and biases. Science. 1974;185(4157):1124-31.
26. Kahneman D, Tversky A. Prospect theory: an analysis of decision under risk. Econometrica. 1979;47(2):263-91.
27. Simon HA. A behavioral model of rational choice. Q J Econ. 1955;69(1):99-118.
28. Gigerenzer G, Gaissmaier W. Heuristic decision making. Annu Rev Psychol. 2011;62:451-82.
29. Nickerson RS. Confirmation bias: a ubiquitous phenomenon in many guises. Rev Gen Psychol. 1998;2(2):175-220.
30. Kunda Z. The case for motivated reasoning. Psychol Bull. 1990;108(3):480-98.
31. Forer BR. The fallacy of personal validation: a classroom demonstration of gullibility. J Abnorm Soc Psychol. 1949;44(1):118-23.

32. Fichten CS, Sunerton B. Popular horoscopes and the “Barnum effect”. J Psychol. 1983;114(1):123-34.
33. Glick P, Gottesman D, Jolton J. The fault is not in the stars: susceptibility of skeptics and believers in astrology to the Barnum effect. Pers Soc Psychol Bull. 1989;15(4):572-83.
34. Langer EJ. The illusion of control. J Pers Soc Psychol. 1975;32(2):311-28.
35. Rotter JB. Generalized expectancies for internal versus external control of reinforcement. Psychol Monogr. 1966;80(1):1-28.
36. Whitson JA, Galinsky AD. Lacking control increases illusory pattern perception. Science. 2008;322(5898):115-7.
37. Merton RK. The self-fulfilling prophecy. Antioch Rev. 1948;8(2):193-210.
38. Festinger L. A theory of cognitive dissonance. Stanford: Stanford University Press; 1957.
39. Benedetti F. Placebo effects: understanding the mechanisms in health and disease. Oxford: Oxford University Press; 2009.
40. Lazarus RS, Folkman S. Stress, appraisal, and coping. New York: Springer; 1984.
41. Slovic P. Perception of risk. Science. 1987;236(4799):280-5.
42. Vyse SA. Believing in magic: the psychology of superstition. New York: Oxford University Press; 1997.
43. Popper KR. Conjectures and refutations: the growth of scientific knowledge. London: Routledge & Kegan Paul; 1963.
44. Radhakrishnan S. The principal Upaniṣads. London: George Allen & Unwin; 1953.